वैदिक विज्ञान की ओर.....

3

वेद की चर्चा के प्रसंग में एक बात सबको ध्यान रखनी चाहिए कि वेद किसी वर्ग अथवा देश का ग्रन्थ नहीं है। यह न केवल समस्त भूमण्डलवासी मनुष्यों का विद्या व धर्म का ग्रन्थ है अपितु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जहाँ भी मनुष्य जैसे बुद्धिमान् प्राणी निवास करते हैं, उन सबके लिए यही वेद है। उन प्राणियों की भाषा व आकृति हम पृथ्वीवासियों से भिन्न हो सकती है, परन्तु उनका धर्म (जीने का तरीका) एवं विज्ञान मूलतः एक ही होना चाहिए। दुर्भाग्य से यह हम पृथ्वीवासियों का भी एक नहीं रह गया है। हम देशों, भाषाओं, नाना विचारधाराओं, सम्प्रदायों की सीमाओं में ऐसे बंटे हुए हैं कि कोई अपने से दूसरे को घृणा व द्वेष की दृष्टि से ही देख रहा है। कहीं संकीर्ण एकता, छलबल, आतंकबल अथवा अन्य मिथ्या आचरण के द्वारा अपने-२ वर्गों की संख्या बढ़ाने का उद्योग किया जा रहा है। आज मनुष्य कहीं दिखाई नहीं देता बल्कि वे हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, पारसी, बौद्ध, कम्यूनिस्ट आदि में बंटा यह मानव परस्पर शत्रु बनता जा रहा है।

ऐसे विकट समय में केवल वेद तथा उसका विज्ञान ही संसार के मनुष्यों को मानवता के एकसूत्र में बांध सकता है। यदि कभी पृथ्वी से बाहर किसी अन्य लोक में रहने वाले बुद्धिजीवी प्राणियों से सम्पर्क हुआ, तो उन्हें भी वेद ही जोड़ सकता है। आज शोक है कि कोई वेदों को कथित जाति अथवा समुदाय से जोड़ रहा है, तो कोई वेद का मिथ्या अर्थ करके मात्र हिन्दू कर्मकाण्ड का ग्रन्थ मान रहा है। हाँ, आर्य समाज से जुड़े विद्वान् इसे कुछ अधिक व्यापक रूप में देखते हैं परन्तु वेद इससे बहुत अधिक विस्तृत, सार्वभौमिक व सार्वकालिक है।

हाँ, इतना अवश्य है कि अनेक विरोधों के होते हुए इतना तो सम्पूर्ण संसार मानता है कि वेद संसार में सबसे पुराना ग्रन्थ है। मैं संसार के सभी सम्प्रदायों के बुद्धिमान् विद्वानों व प्रचारकों से निवेदन करता हूँ कि वे यह बात गम्भीरता से विचारें के जब उनका सम्प्रदाय इस धरती पर आया, उससे पहले मानवमात्र के लिए कौनसी विचारधारा व संस्कृति सर्वमान्य थी? कृपया संकीर्ण भावनाओं तथा समस्त पूर्वाग्रहों को त्यागकर इस पृथ्वी को बचाने में अपनी शक्ति, बुद्धि, धन व जनबल का सदुपयोग करने का प्रयास करें।

क्रमशः.....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक